वट सावित्री व्रत आरतीत्री व्रत आरती

वट सावित्री व्रत आरतीत्री व्रत आरती
आरती वट सावित्री और वट वट वृक्ष की।त्री और वट वट वृक्ष की।
अश्वपती पुसता झाला।। नारद सागंताती तयाला।।
अल्पायुषी सत्यवंत।। सावित्री ने कां प्रणीला।।त्री ने कां प्रणीला।।
आणखी वर वरी बाळे।। मनी निश्चय जो केला।।श्चय जो केला।।
आरती वडराजा।।1।।
दयावंत यमदूजा। सत्यवंत ही सावित्री।त्री।
भावे करीन मी पूजा। आरती वडराजा ।।धृ।।
ज्येष्ठमास त्रयोदशी। करिती पूजन वडाशी ।।ती पूजन वडाशी ।।
त्रिरात व्रत करूनीया। जिंकी तू सत्यवंताशी।
ंकी तू सत्यवंताशी।
आरती वडराजा ।।2।।
स्वर्गावारी जाऊनिया। अग्निखांब कचळीला।।खांब कचळीला।।
धर्मराजा उचकला। हत्या घालिल जीवाला।ल जीवाला।
येश्र गे पतिव्रते। पती नेई गे आपुला।।
व्रते। पती नेई गे आपुला।।
आरती वडराजा ।।3।।
जाऊनिया यमापाशी। मागतसे आपुला पती। चारी वर देऊनिया।
या।
दयावंता द्यावा पती।
आरती वडराजा ।।4।।
पतिव्रते तुझी कीर्ती। ऐकुनि ज्या नारी।। ज्या नारी।।
तुझे व्रत आचरती। तुझी भुवने पावती।।
आरती वडराजा ।।5।।
पतिव्रते तुझी स्तुती। त्रिभुवनी ज्या करिती।। स्वर्गी पुष्पवृष्टी करुनिया।या।
आणिलासी आपुला पती।। अभय देऊनिया। पतिव्रते तारी त्यासी।।
व्रते तारी त्यासी।।